

Gaherai Me Utarna

Date : 10th January 1978
Place : Mumbai
Type : Seminar & Meeting
Speech : Hindi
Language

CONTENTS

I Transcript

Hindi	02 - 09
English	-
Marathi	-

II Translation

English	-
Hindi	-
Marathi	-

ORIGINAL TRANSCRIPT

HINDI TALK

मनुष्य संसार में क्यों आया है? वो ये सोचता भी नहीं कि, 'मैं इस संसार में किसलिये आया हूँ? परमात्मा ने मुझे क्यों बनाया? आखिर मुझे क्या करना चाहिये? मेरे जीवन का अर्थ क्या है? खाना-पीना, बच्चे पैदा करना और मर जाना, यही क्या मेरे जीवन का अर्थ?' फिर उसके बाद बजाय इसके कि सादगी से रहे, सरलता से रहे, अच्छाई से रहे, सिनेमा बनते हैं। लोग देखते हैं उसको, कि ये पाप कर्म किया, वो पाप कर्म किया। उसके फलस्वरूप ये हो गया। ये बीमारी हो गयी, वो बीमारी हो गयी। ये तकलीफ़ हो गयी। रात-दिन हम लोग ये देखते रहते हैं। जिसको कि सेल्फ डिस्ट्राईंग कहना चाहिये। आज ये तकलीफ़ हो गयी है। कोई मुझे आ के बताते हैं कि, 'माँ, मेरे पति का ऐसा है। मेरा बच्चा पागल हो गया। मेरी लड़की का ऐसा हो गया। और तुम सब ठीक कर दो। मेरे पति को भी ठीक कर दो। बच्चों को भी ठीक कर दो। मेरी लड़कियों की शादी भी करा दो।' अरे भाई, तुम्हारी क्या संपदा परमात्मा के पास है? तुम अगर बैंक में जा के कहो, कि हमें एक लाख रुपया दो। तो आपको एक कवड़ी भी नहीं देने वाला न कोई। आप की कुछ तो भी संपदा परमात्मा के पास होनी चाहिये। हमने क्या संपदा जोड़ी?

सहजयोग में आने के बाद भी बहुत से लोग पार हो जाते हैं। पार होने के बाद सोचते हैं, 'हाँ, हाँ, माताजी, हमको बड़ी ठंडक आ गयी। शांती मिल गयी।' माने ये की मुझे सर्टिफिकेट दे दो। आता झालं थंड. जीव थंड झाला. (मराठी)। मुझे सर्टिफिकेट थोड़ी चाहिये कि मैंने तुम्हें पार किया की नहीं किया। मुझे थोड़ी भगवान को सर्टिफिकेट दिखाने का है? अब आप पार हो गये, अब अपनी संपदा जोड़ो। अब आप संपदा जोड़ सकते हैं। उसको जोड़ा की नहीं ये तो देखना चाहिये।

अब देखिये की ये लड़की है। इसकी पूर्वसंपदा कुछ भी नहीं। इसके माँ की नहीं, बाप की नहीं। माँ ने एक ब्लॉक मैजिक किया और बाप ने न जानें कितने धंधे किये। पचासों लड़कियों के पीछे भागता रहा। कितनों की जिंदगियाँ खराब कर दी। ससुर एक नमूना और वो दुसरा नमूना। पूर्वसंपदा सारी बेकार हो गयी। उसके बाद, सहजयोग में आने के बाद भी अगर मनुष्य ये सोचे कि 'हाँ भाई, मुझे शांति मिल जायें। मैं शांतिमय हो जाऊँ। मुझे सुख मिल जायें। बस्।' तो सहजयोग का कोई भी दर्शन आप में नहीं। उसका लाभ कुछ भी नहीं मिलेगा। सहजयोग से विवेक आना चाहिये। विज्ड़म आना चाहिये। सहजयोग से जानना चाहिये कि परमात्मा ने जो दीप हमारे अन्दर जलाया है। ये जो आत्मा की ज्योत हमारे हर एक अंग-प्रत्यंग से बह रही है। इसको हम चैतन्य की तरह से जान रहे हैं। इस चैतन्य को पाने के बाद इससे हमने कौनसी संपदा जोड़ी? कौनसा विशेष कार्य कर दिया? नहीं तो मनुष्य इतना सुपरफिशियली रहता है। सारी जिंदगी उसी में बिता देता है। अनेक जिंदगियाँ वो ऐसे बिता देता है। खाना खाना है, शादी करना है, किसी मेहमान के यहाँ जाना है, किसी को बुलाना है, बस, इसके सिवाय उसका कोई प्रगति की ओर या अपने उत्थान की ओर जरा सा भी विचार नहीं।

इतना उथलापन जीवन की तरफ़ होने से हम लोग कीड़े मकौड़े जैसे मारे जाते हैं, तो क्या आश्चर्य है?

क्योंकि परमात्मा की सत्ता में आपका क्या महत्व है? परमात्मा की सत्ता में आपका कौनसा हाथ हो सकता है? किसी भी गवर्नमेंट में आप देख लीजिये, जहाँ पर की लोग किसी भी तरह से विनाशकारी कार्य करते हैं, वो निकाल दिये जाते हैं। या अगर वो किसी तरह का कार्य ही नहीं कर सकते। बिल्कुल आलसी हो जाते हैं। उनको कोई तनख्वाह नहीं देता। वो भूख के मारे मर जाते हैं। उसी प्रकार परमात्मा के राज्य में अगर आप कोई भी संपदा नहीं जोड़ियेगा, कुछ भी नहीं पाईयेगा। 'हाँ, मुझे तो शांति मिल गयी। मैंने तो पा लिया। माँ ने मुझे दे दिया। सब दूर मेरा इशतहार लगाने से कोई फायदा नहीं होने वाला। गहरी बैठ होनी चाहिये। गहरापन होना चाहिये। आप सोचिये, आपने सहजयोग में क्या क्या किया? इतने साल से आप सहजयोग में हैं। सहजयोग के बारे में आप कबीर पकड़िये। गहरी बैठक आप देखियेगा। गहरा आदमी। आप ही के जैसे इन्सान थे वो भी। पर उनकी गहराई। याने अभी तक भी कहीं भी उनका एक पद सुन लीजिये। मनुष्य गहरा उतरता है।

अपने जीवन के प्रति अपनी ओर एक तरह की इज्जत होनी चाहिये। रिस्पेक्ट होना चाहिये। हमारा जीवन कोई ऐसा व्यर्थ नहीं है जो कोई हम ऐसी वैसी चीज़ों में बर्बाद करें। दो-चार पैसे कमाने के पीछे हम मनुष्य का जीवन बर्बाद नहीं करना चाहिये। हमारा मनुष्य का जीवन अनेक योनियों के बीतने के बाद यहाँ पर आया और उसके बाद सहजयोग से हमने इसकी प्राप्ति कर ली। अब इस जीवन का हमने क्या उपयोग किया? आज मुझे बड़ा आनन्द आया, एक जगह गयी थी मैं। तो वो बताने लगे कि, 'आपके एक शिष्य है। उन्होंने हमारे लड़के की तबियत ठीक कर दी।' मैंने कहा, 'क्या नाम?' कुछ नाम उन्होंने बताया। याद नहीं मुझे। नाम भी याद नहीं मुझे। मैं तो अपने बेटों को उनकी आँख से पहचानती हूँ। पर बड़ा आनन्द आया। नहीं तो बस, मेरे बच्चे को ठीक कर दो। मेरे बाप को ठीक कर दो। मेरी नौकरी ठीक कर दो। मेरे फलाने को ठीक कर दो। ये एक चला। जब वो हुआ। उसके बाद, दूसरी चीज़ है, 'माँ, तुम्हारी वजह से है सब कुछ हो गया। हम को ये मिल गया। हमको शांति मिल गयी।' अरे भाई, मिला तो अब क्या करें तुम्हारा? तुमको भी तो कुछ पाना चाहिये। तुम्हारी भी तो कोई संपदा जोड़नी चाहिये। तो अपना अर्थ पहले समझ लीजिये। इस लड़की को देखने से आपको पता चलेगा। इसके अन्दर भूतबाधा है। जब भी मेरे सामने आती है तो भूत यूँ, यूँ, यूँ, यूँ करता है। हैं न! आपने देखा! आप कहेंगे, 'माँ, मासूम है ये। भगवान ने इसे ऐसा क्यों कर दिया?' भगवान कभी भी किसी पे अन्याय क्यों करें? वो तो करूणानिधि है। प्रेम के सागर है। वो तो आपको शांति देने के लिये ही उतावले है। पर आप ही लोग नहीं लेना चाहते तो उसे वो तो भी क्या करें? आपको तो स्वतंत्रता दी हैं न! इस स्वतंत्रता का उपयोग आप लोग अगर अपनी उत्थान के लिये, अपनी संपदा जोड़ने के लिये करे तो सहजयोग में अनन्त उस की राशियों की राशियाँ पड़ेंगी। मुफ्त में हज़ारों, लाखों, करोड़ों, ऐसे आशीर्वाद पड़े हुये हैं जिसको ले के, उस आशीर्वाद को लेने के लिये, उस परम आनन्द को पाने के लिये अपने में गहराई उतारनी चाहिये। जैसे अगर आपके अन्दर प्याला ही न हो तो क्या पत्थर पे पानी डालेंगे। मनुष्य को अपने प्रति कोई भी श्रद्धा नहीं है, कोई भी रिस्पेक्ट नहीं है। जो अपनी जिंदगी का क्षण-क्षण व्यर्थ फेंक रहा है। उसके अन्दर क्या परमात्मा का राज्य उतरेगा? और उतर के भी क्या उसका फायदा होगा?

इसकी संपदा जोड़नी है। क्षण-क्षण, हर शब्द में इसकी संपदा जोड़नी है। एक शब्द भी मुँह से निकले तो वो मंत्र बन सकता है। आप जानते हैं कि जब मैं बोलती हूँ तो आपके अन्दर के चक्र घूमने लग जाते हैं। इसी प्रकार आप की भी जिह्वा पर जब प्रेम का राज्य आ जायेगा, तो जो शब्द आप बोले वो मंत्र मात्र हो जाता है। और जो

कुछ भी आप बोलोगे सत्य हो जाता है। अब तो अनन्त के दरवाजे खुल गये हैं। जब परमात्मा के राज्य में आपका समावेश हो गया, तो उससे और अधिक क्या हो सकता है? पर इस वक्त वो डिग्रिटी, वो बड़प्पन, वो संजीदापन जब तक आप लोग अपनायेंगे नहीं, तो परमात्मा के द्वार पर भी आपको कितनी देर कोई खड़ा रखेगा? आपके लिये सिंहासन तैय्यार किया, कि आईये, बैठिये। लेकिन आप में अगर ये शक्ति ही नहीं की सिंहासन पर बैठे, वो संजीदापन ही नहीं आपके अन्दर में, तो वहाँ बैठ के भी क्या होगा? परमात्मा के राज्य में घुसने वाले लोगों को जरूरी चीज़ चाहिये कि पहले चीज़ मान लेना चाहिये, कि परमात्मा सर्वशक्तिमान है और वो सारे कार्य को करता है। सारा कार्य वो निष्पन्न करते हैं। ऐसे सर्वशक्तिमान परमात्मा के राज्य में घुसने के बाद, हमें अपना अहंकार छोड़ देना चाहिये। ये सिर्फ सहजयोग के बाद हो सकता है। पहले नहीं। जब तक आत्मसाक्षात्कार नहीं होता, आप अपना अहंकार नहीं छोड़ सकते। उस वक्त कहना चाहिये, 'मैं नहीं, तू ही तू। तू अपना काम कर। मैं देख रहा हूँ। द्रष्टा मात्र।' ये सहजयोग के बाद ही संपन्न हो सकता है। उससे पहले नहीं हो सकता। जैसे मैंने कहा था कि आपकी मोटर ही स्टार्ट नहीं हुई, तो आप आगे कैसे प्रोग्रेस करेंगे? कुण्डलिनी का जागरण हो कर के, ब्रह्मरंध्र को छेद कर के आपका चित्त उस प्रांत में पहुँच जाता है, उसके बाद ही ये कार्य संपन्न होता है। इतना बड़ा मुकुट अगर सर पे लगाया हुआ है, लेकिन आप की चाल अगर वो नहीं हो तो क्या शोभनीय होगा! सब लोगों को बैठ के सोचना चाहिये कि हमने कौन सी संपदा इकट्ठी की। और सहजयोग का लाभ हमें जैसा हुआ है ऐसा कितने लोगों के लिये देने का हमने प्रयत्न किया है। खुद ही सहजयोग का फायदा उठा कर के बैठ जाना। कोई बड़ी विशेषता नहीं। ये कोई अपनी निजी प्रॉपर्टी नहीं है। ये जागतिक ही नहीं पूरी युनिवर्सल प्रॉपर्टी है। इसको सब को देना चाहिये। सब को बाँटना चाहिये। और सबको ये आनन्द और शांति मिलनी चाहिये और सबको आत्मा का प्रकाश मिलना चाहिये।

आप जानते हैं कि इस बम्बई शहर में, हजारों लोग ऐसे हैं, जिनको ये भी नहीं मालूम कि उनके अन्दर आत्मा जागृत है। कुछ भी नहीं जानते। हालांकि आप बहुत कुछ जान गये हैं आत्मा के बारे में। आप आत्मा को पहचान गये हैं। उसके प्रकाश को आप पहचान गये हैं। आपके अन्दर वो प्रकाश जागृत हो गया। इस जन्म में जो भी कुछ मिला है, वो किसी भी जन्म में पहले नहीं मिला था। अहोभाग्यम्! अब इस पर, इतनी बड़ी संपदा मिलने के बाद हमने कौनसी कौनसी अपनी संपदायें जोड़ी हैं, इसका हिसाब जोड़ना चाहिये।

जैसे ही इसका हिसाब जोड़ना शुरू हो जायेगा आनन्द की लहरियाँ की लहरियाँ उठनी शुरू हो जायेगी। जो आज तक आपका आनन्द इकट्ठा करने का तरीका था, उसके बराबर उल्टा अब तरीका बनता है। जैसे पहले ये होता था कि कोई चीज़ बाज़ार से जा के आपने खरीद ली, तो बड़ा आनन्द होता है। अब अगर आप किसी को कोई चीज़ देंगे तो आपको आनन्द होगा। पहले अगर ये कहने में बड़ा आनन्द होता था कि ये मेरा भाई है, ये मेरी बहन है, ये मेरा फलाना है। इसका ठीक करना है, उसका ठीक करना है। मेरे बच्चे हैं, मेरा बाप है। अब दूसरों को अपनाने में आनन्द होगा। ये जो दायरें और सीमित प्रवृत्तियाँ हैं, ये जब टूटेंगी तब आनन्द होगा। पहले जो झूठ बोल कर के या किसी को दुःखदायी बात कह कर के, आप सोचते थे कि आप आनन्द पा लेंगे। आप किसी से एक भी प्रेम की बात करने से अनन्त आनन्द आयेगा। हमें तो प्रेम से बात करना आता ही नहीं। मैं मनुष्य को देखती हूँ, इनको तो किसी से प्रेम से बात करना आता ही नहीं। जो भी होता है, इतना कृत्रिम और इतना बँधा हुआ,

अनैसर्गिक बिल्कुल। इसमें कोई भी स्पॉन्टैनिटी नहीं। उसके अन्दर कोई खिंचाव नहीं, वॉर्मथू नहीं। उपरी जबान से हम लोग दूसरों से बात करते हैं। लेकिन सहजयोग के बाद नितांत प्रेम से हम लोग बात कर सकते हैं। एक भी शब्द कह देना और उसका कोई बुरा भी नहीं मानता। अभी आपने देखा इस लड़की को मैंने कहा, किस तरह से, हालांकि एक तरह से मैंने उसको डाँटा ही था। लेकिन वो समझ गयी। सहजयोग के आनन्द किसी किसी ने बहुत पाये हैं। लेकिन जब तक आप गहरे इसमें उतरेंगे नहीं, तब तक कुछ भी लाभ नहीं होने वाला।

आप जानते हैं कि हमारे प्रोग्राम में हजारों में से कम से कम कुछ नहीं तो आधे लोग पार हो जाते हैं। और उसके बाद बैठ गये घर में। घर में बैठ गये। फिर कहीं कहीं मिल जाते हैं, 'माँ, उस दिन बड़ा आनन्द आया था मुझे।' 'फिर क्या हुआ भाई?' 'फिर मैं उसी आनन्द में बैठी रही।' 'फिर क्या हुआ?' 'फिर एक गुरुजी आये थे। उनके मैंने पैर छुआ। उस दिन से मेरा आनन्द गायब।' 'तो तुम गयी क्यों उनके पास? अरे, तुमको किसी के पास जाना ही था, तो किसी माँगने वाले के पास जाओ। जिसको जरूरत है उसके पास जाते। उससे कहते। तुम ऐसे आदमी के पास गयी ही क्यों?' उसकी वजह ये की आपकी दृष्टि अभी खुली नहीं। आपने वाइब्रेशन्स पहचाने नहीं। आप ऐसे आदमी के पास पहुँच भी नहीं सकते। मैंने बच्चों को देखा है जो रियलाइज्ड सोल्स होते हैं, वो अगर ऐसा कोई आदमी देखते हैं घर में आते हुये तो दूसरे दरवाजे से बाहर जायेंगे। या रोना शुरू कर देंगे अगर छोटे छोटे बच्चे होंगे तो, कि ये कैसा आदमी आ गया? कुत्ते होंगे तो भौंकने लग जायेंगे। ऐसे आदमी का फोटो देख लेंगे तो भौंकना शुरू कर देंगे। और अगर आप सहजयोग से ये भी नहीं पहचान पाते कि कौनसा आदमी क्या है? ये क्या कर रहा है? ये किस तरह से हमें बता रहा है? इसमें कोई अर्थ है या नहीं है? फिर वो सहजयोगी भी क्यों न हों! कोई भी क्यों न हों। अभी तक आप इसको नहीं पहचान पाते तो आपने अपने वाइब्रेशन्स पहचाने नहीं। वाइब्रेशन्स में गहरा उतरना पड़ेगा। हर एक चीज़ में गहराई आनी पड़ेगी।

गहराई क्यों नहीं आती? हर बार यही प्रश्न होता है कि क्यों नहीं? क्योंकि आपको अपने प्रति इतनी सी भी इज्जत नहीं। आप अपने को जानते नहीं कि आप क्या है? मनुष्य अपने को जानता नहीं कि वो क्या है? अब सब ने कहा कि भाई हाँ, तू ये नहीं जो बाहर दिखता है, तू अन्दर जो है सो है। ये तो कहना, कहना हो गया। अब तो मैंने तुम्हें दिखा दिया ना! अगर मनुष्य पार होने के बाद भी अपनी पहचान पूरी नहीं कर लेगा, तो फिर कब करेगा। अपने प्रति पूर्णतया श्रद्धामय होना चाहिये। माताजी के दर्शन के लिये सब लोग उत्सुक हैं। लेकिन अपने दर्शन के लिये पहले होईये। पहले अपने दर्शन करिये। अपने को हार पहनाईये, अपनी आरती उतारिये, अपने को देखिये, लेकिन अपना तो खोया हुआ है। अपना तो छिपा हुआ है। अपने का जागरण जब पूरा होगा, तो फिर आप स्वयं देख सकते हैं। अपने को देखना सीखना चाहिये। आपका दर्पण समाज, आपका दर्पण समाज है। समाज में एक मनुष्य विचरता है। उसके लिये ये 'बाप रे कौन आदमी आ गया ये? कैसे आ गया?' एकदम मैग्नेटिक। स्वच्छ, निर्मल में। अन्दर-बाहर एक। डिग्रीफाईड, एकदम से देखते ही लगता है अहाहा, कितनी निर्मल सी दृष्टि! प्रेम भरा हूँ। देखती ही साथ समाज कहता है, अहाहा, क्या आदमी है! वो मर जाये। सौ साल हो जाये। चाहे दो हजार वर्ष हो जाये। पाच हजार वर्ष हो जाये। वो जिस मिट्टी में गड़ेगा वो मिट्टी का भी सुगन्ध फैलायेगी।

एक मनुष्य होता है वो उपर से ढोंग बना कर के आता है। तिलकधारी, फलाना-ढिकाना। मैं अमका हूँ,

ढमका हूँ। थोड़े दिन उसका चल जाता है। लोग उसको मानते हैं, होता है। बाद में सबेरे उसका मुँह नहीं देखेंगे। आपके लिये वो मार्ग खुल गये हैं। आपके लिये वो तरीका खुल गया है। सिर्फ अपने ही आनन्द में संतोष नहीं करना। ध्यान करो। ध्यान से अपने को गहराई में बिठाओ। और इस गहराई को जब तक आप बाटोगे नहीं और दूसरों की संपदा जोड़ोगे नहीं, तब तक आनन्द भरपूर नहीं हो सकता। कितनी भी संपत्ति हमारे पास हो जाये, और जब तक हम उसे बाटेंगे नहीं, हमें आनन्द नहीं आने वाला। और अगर हम उसे बाटेंगे नहीं तो होगा क्या? थोड़े ही दिन में हम विकृत हो जायेंगे। आपने देखा है जो कंजूस होते हैं, उनके रुपये दूसरे तरीके से निकल जाता है। इस वक्त ये समझ लेना चाहिये, कि जो जो लोग पार हो गये हैं, इनको लुटा देना चाहिये अपने को। अपने में गहराई ला कर के समुद्र जिस तरह से आकाश में मेघों के आवरण के आवरण भेज देता है। इसी प्रकार आपको करना चाहिये। ये तो नहीं की समुद्र गहरा है तो सारा पानी अपने ही उपर खींच लेता है! इसलिये वो गहरा है कि उसमें से अनेक मेघ निकल कर चले जाये और सारे संसार में फैल जाये तो भी उसके अन्दर की संपदा खत्म नहीं होगी। और फिर खींच कर वही पानी उसी में वापस चला जाता है। अपनी अपनी संपदा जोड़नी है। उसके लिये मेहनत करनी होगी। 'अब क्या करूँ माँ, मेरे घर में बच्चे हैं। मेरे ये हैं। मेरे पति ऐसे हैं।' मैं कुछ नहीं कर सकती। 'मेरी पत्नी ऐसी है।' आप ही में ऐसी मिसालें हैं आप जानते हैं, ऐसे लोग हैं, जिनके घर में बहुत उनको तकलीफ़ हैं। लेकिन वो अपनी संपदा जोड़ रहे हैं। क्या आखिर ये घर हमारे साथ नहीं देने वाला। हमारी संपदा ही हमारा साथ देगी।

आप लोग सब वाल्मीकि का किस्सा जानते हैं। मुझे फिर से बताने की जरूरत नहीं। इसका मतलब ये नहीं कि घर वालों से आप दुष्टता करें। उसका उल्टा भी हिसाब हमेशा लोग जोड़ लेते हैं। इसका मतलब वो नहीं। क्योंकि जो भी बात कहती हूँ, उसका बराबर उल्टा हिसाब मत लीजिये। मेरा मतलब है कि घरवालों को तो प्यार करना ही चाहिये। लेकिन 'मेरा बच्चा, मेरा बच्चा,' ये करने की कोई जरूरत नहीं है आपको। ठीक है, उनका खाना-पीना, उनको प्यार देना, व्यवस्थित इस तरह से करते रहे। मैं तो यहाँ तक कहूँगी कि जितना आप अपने बच्चों को प्यार करते हैं, उतना कम से कम करें। बहुत कठिन बात लगती है आपको। अच्छा उतना नहीं, उससे आधा करो। शुरुआत तो करो। पहले शुरुआत करो, फिर मजा आने लगेगा तो और करियेगा। प्रेम का आनन्द उठाईये। वही आनन्द, वही है। प्रेम ही आनन्द है। प्रेम जो हर समय बहते रहता है। जब वो लौट के पास अपने पास आता है तो आनन्द की लहरें आती हैं। जाते वक्त वो प्रेम होता है, लौटते वक्त वो आनन्द देता है। प्रेम और आनन्द में अन्तर कभी मुझे दिखायी नहीं देता है। सब कुछ प्रेम ही प्रेम है। और यही एक बड़ा भारी सत्य भी है। और कोई चीज़ सत्य नहीं है।

अब सहजयोग में आप में से तो कुछ लोग वहाँ पहुँच गये। कुछ लोग अभी वहाँ पहुँच गये हैं। कुछ लोग पाताल में जाने की भी व्यवस्था करते हैं। इसमें सिर्फ मैं इतना कहूँगी कि उन लोगों को देखिये जो उँचे चले गये। किस तरह से गये? सिर्फ डेडिकेशन टू युवरसेल्फ हो जाये तो सब काम हो जायेगा। डेडिकेशन को युवरसेल्फ आते ही साथ में आप समझ लेंगे कि आपका सेल्फ इसी में खुश होता है, कि जब आप सामूहिक हो जाते हैं। सामूहिकता बिल्कुल आपकी अपनी ही बन जाती है। अंग-प्रत्यंग बन जाती है। जैसे आप अपनी आँख से सब चीज़ देखते हैं, उसी तरह से आपका जो चित्त है, वो सामूहिक हो जाता है। इसको रियलाइजेशन से समझाना कठिन है। पर जिसका रियलाइजेशन हो गया है, आप में से जो जानते हैं, वो जानते हैं कि सामूहिक चेतना क्या

होती है? लेकिन अभी 'मेरा बाप, मेरी माँ और मेरी बहन' तक ही जिनकी सामूहिक चेतना है और उससे परे नहीं है वो, उनके दायरे बन गये हैं। इसको तोड़ना होगा। मैं ये चाहती हूँ कि सहजयोगियों की प्रगति दिनो दिन और हो। वो और गहरे बैठें। अपनी डिग्रिटी होनी चाहिये। अपना संजीदापन होना चाहिये और उसमें गहरे बैठते जाना चाहिये। जैसे जैसे आप उसमें गहरे बैठते जायेंगे, वैसे वैसे आप देखियेगा आप सामूहिक होते जायेंगे। आप में और किसी भी महान आत्मा में कोई अन्तर नहीं है। फर्क इतना है कि वो सामूहिक हो गया। और आप अपने ही तक सीमित हो गये। इस सीमा को तोड़ने का सब से अच्छा तरीका है, पार हो जाना। वो पार आपको कर दिया, पर बार-बार आप अपने दायरे में बढ़ते जाते हैं। और जब बढ़ते भी है तो दायरा बढ़ाते रहते हैं। उसको तोड़ते नहीं। उस दायरे को तोड़ना होगा। जैसे दायरा टूट जाता है तो आप समझ लेंगे कि आप सामूहिक हो जायें।

अब इतने लोग काफ़ी है मेरे लिये। मुझे इससे ज्यादा लोग नहीं चाहिये। इतनों ही के प्रकाश में मैं सारे संसार को प्रकाशित कर सकती हूँ। लेकिन इतने भी तो जमे हुये हो! सब के दीप डाँवाडौल चलते हैं। झिझकते गये, कभी उपर आ गये, कभी इधर मुड़ गये, फिर उधर मुड़ गये। इतने दीप अगर बराबर जलते गये तो दिवाली सज जायेगी। इससे ज्यादा की जरूरत नहीं है। लेकिन इतने भी जले नहीं रहते हैं। आप जानते हैं कि बात-बात में उलझ जाते हैं। गिर जाते हैं। गहराई से उतरो। सामूहिकता में उतरो। तब आप जग के नेता होंगे। जग के नेता। एक विशेष कम्युनिटी के या विशेष देश के नहीं। लेकिन सारे सामूहिक लोगों के है। आप विराट के अंग-प्रत्यंग में आप एक छोटे-छोटे से सेल्स हैं। अब जो जागृत सेल्स हो गये हैं वो इस जगह बैठेंगे जहाँ पर ये कार्य सब से अधिक होता है। जैसे ब्रेन सेल्स है, हृदय के सेल्स हैं। अपने जिगर के सेल्स हैं। अब ये सेल्स जो हैं चलते रहते हैं। ये विशेष जागृत सेल्स हैं। और ये अगर डाँवाडौल रहे तो उसी तरह से विराट का हाल होगा जैसे जिस आदमी का लिवर खराब हो। या किसी का ब्रेन खराब हो। या किसी के हृदय में प्रेम ही न हो। ड्रायनेस आये। जो कुछ भी परमात्मा है और जो कुछ भी विराट है, उसके अंग-प्रत्यंग आप ही हो। ये आप कभी नहीं सोचते हो। अगर मेरी छोटी सी उँगली में भी जरा सा भी दर्द होता है, तो भी मेरा सारा शरीर दुखित हो जाता है। इसी तरह से सोचिये, कि थोड़ा सा एक भी अगर सहजयोगी गलत रास्ते से चलता है, तो मेरे अंग-प्रत्यंग सारे दुखते हैं। अगर इस तरह से आप सोचने लगे तो आप वाकई में आप पूरा प्रयत्न कर रहे हैं कि हम सज्जग हो के इस तरह से बैठें और किस तरह से अपने गहराई में उतरें? गहरेपन में उतरें। सहजयोग से पहले मैं ये कहती थी कि आप कुछ नहीं कर सकते। आप अपने उपर कंडिशनिंग मत करिये, अपना ब्रेन वॉश मत करिये। किताबें मत पढ़िये। उसको पढ़ने से आपको ऐसा लगेगा कि 'मुझे आज सबेरे उठना है, शाम को सोना है। मुझे इस वक्त पूजा करनी है। फिर मुझे वहाँ जाना है। वहाँ जा के मुझे हठयोग करने है। फिर मैं सर के बल खड़ा होऊंगा। मुझे ये करने का है।' ये सब कुछ नहीं करो। सहज में ही पार हो जाओ। पर सहजयोग के बाद जब आप पार हो गये, जब परमात्मा के राज्य में आपका प्रवेश हो गया अब कार्यान्वित हो जाईये आप। उसके बाद आपको कार्यान्वित होना पड़ेगा। अब आपकी संस्थायें चालू हो गयी। जब संस्थायें चालू हो गयी तब आपको कार्यान्वित होना ही पड़ेगा नहीं तो उसका कोई अर्थ ही नहीं रहेगा। रोजमर्रा के काम आपके चलते रहते हैं। रोज के आपके धंधे चलते रहते हैं। सब कुछ आपका होते रहता है। लेकिन जो असली काम है वो नहीं होता।

कल मैं कावसजी जहाँगीर में बोलने वाली हूँ। वहाँ जितने ला सकते हैं, अपने रिश्तेदार, अपने घर वाले, वहीं

से शुरू करिये। जितने लोगों को ला सकते हैं जरूर लाईयेगा। कल मैं सहजयोग पे विशेष तरह से बताऊंगी। कितनी प्रचंड शक्ति परमात्मा ने हमारे अन्दर दी हुई है। और उसका उपयोग किस तरह से करना चाहिये। जितने लोग हैं आना ही होगा। अँडवर्टाईज करने से अधिकतर लोग ऐसे आते हैं जिनको कोई खोज नहीं है। और जो आते हैं खो से जाते हैं। लेकिन आप अगर अपने रिलेशनन्स को लाये या अपने पहचान वाले लोगों को लाये, तो एक एक आदमी के पच्चीस लोग, उनमें से दस खो भी गये तो दस की वो खबर रख सकते हैं। लेकिन अँडवर्टाईज करने में इधर से कुछ खुर्दा आया, उधर से कुछ खुर्दा आया और उसके बाद में सब पार हो गये। 'हाँ, मैं ठंडा हो गया' और उसके बाद चले गये। और सब खुर्दे खो गये। मेरी तो मेहनत ऐसी ही व्यर्थ जाती है। इसलिये आप बीच में जो एक एक पॉइंट है वो अपने साथ पच्चीस पच्चीस आदमी भी लाये। जैसे आप इन्विटेशन देते हैं शादी ब्याह का। वैसे ही सहजयोग का इन्विटेशन दीजिये। और ऐसे लोगों को आप अगर सहजयोग में ले आये, उनका लाभ कराये और उनको देखे। तो आपके हर एक आदमी का एक-एक गुप बन सकता है। अब बैठ के यही सोचो कि कितने लोगों को ला सकते हो। उनसे कहना कि एक बार आओ, वहाँ चलो और जिनको अभी तक आपने लाया उन सब को ले के आओ। जब कोई बीमार होता है तो उनको आप ले के आ जाते हो। माँ, ये मेरे पड़ोस के बहन का, उसका फलाने का, ढिकाने का, सगा ससुरा है, उसको आप ठीक कर दो। सगा, उसको ठीक किया। पार किया। माताजी, के पैर तुड़ाये। घंटो भर यहाँ मेरे पैर पे उसको रखा। उसके बाद वो सगा ससुरा गायब और सास भी गायब। उसके बाद वो कभी दिखायी नहीं देते। आप अकेले जीव कभी कभी घूमते नजर आते हैं। ये नहीं करना चाहिये। अगर आप सोचते हैं कि माँ के पास लाना है, उसको ठीक कराना है, वैसे आप सोचते हैं कि उनका भला कराना है। ऐसा ही सोचना चाहिये कि उनका असली भला परमात्मा को मिलाने से ही होगा। उनकी असली अच्छाई इसी में होगी। ये नहीं कि सुपरफिशियली आपने कह दिया। और काम खत्म। आंतरिक, अन्दर से महसूस करना चाहिये और सोचना चाहिये, कि हमने इनका कितना अच्छा किया है। क्या ऊपरी ऊपरी बस इनकी तबियत ठीक करना है, क्या पहलवान बनाने का हमारा कार्य था। अगर हम उनके लिये ये सोचते हैं कि नितांतता से उनको कुछ मदद करें, या उनको अपनायें, तो क्या वाकई में हमने उनको असली चीज़ दी की नहीं। ये तो ऐसा ही हुआ कि किसीसे कहा कि आओ तुम। तुम्हें हम हीरे-जवाहरात देंगे। और जब वो आये तो उनको आपने कुछ नकली चीज़ दे दी। कहा, जाओ, जाओ। हीरे तो हम खायेंगे, तुम बैठे रहो। उनको बार-बार बुला के लाना चाहिये। आप ही सोचिये आप कितने लोग माताजी के पास ठीक कराने के लिये हर एक आदमी लाये। क्या हॉस्पिटल कम है मुझे? आप लोगों की क्या जरूरत है? मैं तो, हॉस्पिटल में जा सकती हूँ ठीक करने के लिये। पहले आप ये सोचें हाँ माँ, मेरा फलाना बीमार है, उसको मैं ले के आऊँ। उसको ले आयें। माँ ये उसका आदमी है, ये पागल हो गया। अरे वो, पागलखाने भेजो। मुझे क्यों परेशान कर रहे हो? उसको भी ले आये, उसको भी ले आये, ठीक है। ये किस सिलसिले में किया। आपको उनके प्रति बड़ी करुणा है। अच्छा भाई, आपको करुणा आयी, आपके घर। पर अब वो करुणा क्यों खत्म हो गयी। ये क्यों नहीं सोचा, कि उसको गहरा नहीं बिठाया है हमने।

आज सब लोग बैठ के इस बात का मनन करें। और इस चीज़ का पूरा हिसाब लगायें कि हमने कितने लोगों के साथ किया। मैं तो ये तक देखती हूँ कि पिता आते हैं, बच्चे नहीं आते। आप के बच्चे कल हिप्पी बन के घूमेंगे तब आयेंगे कि माताजी, इनका ड्रगज छुड़ाओ। ऐसे बहुत मैंने देखे। जब उनके बच्चे चले गये और ये करने लगे या

चोरी करने लग गये, या बीमार पड़ गये, तो माँ इसको ठीक करो। अरे, मैंने इसकी शकल नहीं देखी। ये किस को लाये हो तुम। और वो इसलिये खुद यहाँ जुड़े बैठे हैं, कि एजन्सी है। माताजी को हम जानते हैं, चलो भाई तुमको हम मिला देते हैं। एजन्सी है वो। कोई उसमें नितांतता, कोई गहरापन नहीं। एजन्सी लिये हुये हैं। 'माताजी को, हम आपको जानते हैं। अच्छे से। हम उनसे मिला देते हैं। चलिये।' पागलों की कोई कमी नहीं है। बीमारियों की कोई कमी नहीं है। आप मेहेरबानी से बीमार लोग इकट्ठे न करें। लेकिन आपने जिन लोगों को यहाँ लाया है, उनका फायदा कराया है। ठीक है, ये भी हमारा एक हृदय है। चलता है, आपको आप लाईये। और कहिये, गहरे उतरो, गहरे उतरो, गहरे उतरो। पार्टिओ में बुलाते हो, खाने पे बुलाते हो, ये करते हो, वो करते हो। उनके खुशी के लिये शराब भी पिलाते हैं। कभी ये भी सोचना चाहिये कि उसको अमृतपान भी देना चाहिये। जो हमने अमृत पाया, उसको भी थोड़ा देना चाहिये। चलो इसी की पार्टी कर रहे हैं, उसका अमृत देंगे। जरा इसको सोचो तो कितनी आनन्द की बात है। स्वर्ग में जाने की जरूरत क्या? यही स्वर्ग बन सकता है। किसी किसी के लिये बहुत स्ट्रगल हो जाता है। और जिनके लिये नहीं है वो बहुत आसानी से लेते हैं। इसलिये किसी किसी का स्ट्रगल बनाना पड़ता है। नहीं तो वो करते ही नहीं। मनुष्य की खोपड़ी इतनी उल्टी है, कि उसका इलाज भी करना पड़ता है। अपनी खोपड़ियाँ सीधी करें पहले। दूसरा, अपने प्रति श्रद्धा और प्रेम और अत्यंत आदरयुक्त दृष्टि से देखें कि भाई, कि हम अगर ये हैं, अविनाशी तत्त्व, और हमारे अन्दर से ये अविनाशी तत्त्व, चैतन्य अगर बह रहा है, और ये वास्तविकता है, तो इस उँचे जीवन को हमने क्या किया? इस जीव का हमने क्या आदर किया? इसका हमने क्या उपयोग किया? कल परमात्मा आपसे पूछेगा, कि जब तुमने इतना पाया था, तो इसका क्या किया तुमने? मेरी मेहनत में तो कोई कमी नहीं है न! क्या मेरे प्यार में तो कोई कमी नहीं है?